

अल्लाह केन 1म से जो बडा मेहेरबान और रहम वाला है

कुरआन और नमाज़ को समझना शुरू कीजिये आसान तरीके से

शॉर्ट कोर्स

सूरह अलफ़ातिहा, 6 सूरतें, नमाज़ के अज़कार और चंद दुआओं वगैरह की मदद से 100 मुख्य शब्दों को समझना और याद रखना जो कुरआन में तक़रीबन 40,000 बार आये हैं (कुल तक़रीबन 77,800 में से), यानी कुरआन के 50% शब्द!!!

नोट इस कोर्स में शब्दों के सिर्फ़ बुनयादी माने ही दिये गये हैं। बाज़ शब्दों के दूसरे माने भी हो सकते हैं।

मक़सद कुरआन को समझना आसान लगे, हिम्मत अफ़ज़ाई हो, आगे की तालीम मज़ीद आसान हो, कुरआन के साथ तआमुल (Interaction) यानी तदब्बुर व तज़क्कुर स्पष्ट हो।

लेखक

डॉक्टर अब्दुल अज़ीज अबदुल रहीम
डाइरेक्टर, अन्डरस्टैंड कुरआन अकैडेमी, हैदराबाद



Understand Qur'an Academy – Hyderabad, INDIA
www.understandquran.com

असबाक की लिस्ट

	कुरआन या हदीस	क़वाइद	नुकाते शौक़ व खौफ़
0.	तअरुफ़		
1.	सूरह अल फ़ातिहा (1-4)	هُوَ، هُمْ، ...	
2.	सूरह अल फ़ातिहा (5-7)	هُوَ مُسْلِمٌ، هُمْ مُسْلِمُونَ، ...	
3.	सूरह अल अस्र	رَبُّهُ، ... دِينُهُ، ... كِتَابُهُ، ...	
4.	सूरह अल नसर	لِ، مِنْ، عَنْ، مَعَ	
5.	इआदा (Revision)	بِ، فِي، عَلَى، إِلَى	
6.	सूरह अल इख़लास	فَعَلَ، فَعَلُوا، فَعَلْتُ، فَعَلْتُمْ، فَعَلْنَا	
7.	सूरह अल फ़लक़	فَعَلَ، فَعَلُوا، فَعَلْتُ، فَعَلْتُمْ، فَعَلْنَا	
8.	सूरह अल नास	يَفْعَلُ، يَفْعَلُونَ، تَفْعَلُ، تَفْعَلُونَ، أَفْعَلُ، نَفْعَلُ	
9.	इआदा (Revision)	يَفْعَلُ، يَفْعَلُونَ، تَفْعَلُ، تَفْعَلُونَ، أَفْعَلُ، نَفْعَلُ	
10.	सूरह अल काफ़िरुन	إِفْعَلُ، إِفْعَلُوا، لَا تَفْعَلُ، لَا تَفْعَلُوا	
11.	वजू के अज़कार	فَاعِلٌ، مَفْعُولٌ، فِعْلٌ	
12.	इक़ामत और सना	Table فَعْل	
13.	रुकू सजदा और तशह-हुद	فَتَحَ، يَفْتَحُ، افْتَحَ... جَعَلَ، يَجْعَلُ، اجْعَلُ...	
14.	दरुद	نَصَرَ، يَنْصُرُ، اُنْصُرْ... خَلَقَ، يَخْلُقُ، اَخْلُقْ...	
15.	दरुद के बाद	كَفَرَ، يَكْفُرُ، اُكْفُرْ... ذَكَرَ، يَذْكُرُ، اذْكُرْ...	
16.	दुआएँ सोने और खाने पर	رَزَقَ، يَرْزُقُ... دَخَلَ، يَدْخُلُ... عَبْدٌ، يَعْبُدُ...	
17.	इआदा (Revision)	ضَرَبَ، يَضْرِبُ... ظَلَمَ، يَظْلِمُ... غَفَرَ، يَغْفِرُ...	
18.	कुरआनी दुआएँ	سَمِعَ، يَسْمَعُ... عَلِمَ، يَعْلَمُ... عَمِلَ، يَعْمَلُ...	
19.	मुतफ़ररिकात -1	قَالَ، يَقُولُ، قُلْ... كَانَ، يَكُونُ، كُنْ...	
20.	मुतफ़ररिकात -2	دَعَا، يَدْعُوا... شَاءَ، يَشَاءُ، جَاءَ، يَجِيءُ،	
21.	इआदा (Revision)	هَذَا، هَؤُلَاءِ، ذَلِكَ، أُولَئِكَ، الَّذِي، الَّذِينَ	
22.	बार बार आनेवाले अलफ़ाज़ -1	—	
23.	बार बार आनेवाले अलफ़ाज़ -2	—	
24.	इस कोर्स के बाद?	—	

अहेम हिदायत

कोर्स सीखने की शर्त: आपको अरबी कुरआन और हिन्दी पढ़ना आना चाहिये ।

दौरानिया: 9 घन्टे (दो या तीन क्लासेस में)

इस शोर्ट कोर्स को अच्छी तरह सीखने के लिये चन्द बातें याद रखिये :

- हम आराम से बगैर किसी दबाव के सीखेंगे ।
- ये पूरी तरह पारस्परिक (interactive) शोर्ट कोर्स है इस लिये ध्यान से सुनिये और लगातार अभ्यास भाग लेते रहिये ।
- प्रेक्टिस याने अभ्यास करते हुऐ अगर ग़लती हो तो कोई बात नहीं ।
- जो ज़ियादा प्रेक्टिस करेगा वह उतना ही ज़ियादा सीखेगा । यह सुनेहरी कायेदा याद रखिये:
- I listen, I forget;
- I see, I remember;
- I practice, I learn;
- I teach, I master.

सात होम वर्क्स को करना बिलकुल न भूलिये : (2 तिलावात के, 2 पढ़ने के, 2 सुन्ने और सुनाने के, और 1 इस्तेमाल करने का)

1. कम से कम 5 मिनट मुसहफ़ (कुरआन) देख कर तिलावत करना ।
2. कम से कम 5 मिनट बगैर देखे अपने हाफ़ज़े से (जो भी याद हो) तिलावत करना ।
3. कम से कम 5 मिनट पिछले और अगले सबक़ का इस किताब से मुतालआ ।
4. कम से कम 5 बार हो सके तो 5 नमाज़ों से पहले या बाद में या जैसा भी मौक़ा मिले) सिर्फ़ 30 सेकन्ड यानी सिर्फ़ आधे मिनट के लिये शब्द और मानि के पन्ने से (जो इस कोर्स के साथ दिया गया है) मुतालआ करना ।
5. टेप रिकार्ड या CD से इन आयात और अज़कार के शब्दों के अनुवाद को सुनना ।
6. दिन में कम अज़ कम एक मिनट अपने क्लास के दोस्तों से सबक़ के सम्बन्ध से बात करना ।
7. जो सूरतें आपको याद हों, उन को नमाज़ों में पढ़ते रहना ।

दो मज़ीद होमवर्क्स भी याद रखिये: (1) खुद के लिये दुआ और (2) अपने साथियों के लिये दुआ कि अल्लाह हमें कुरआन के हकूक़ अदा करने की तौफ़ीक़ दे और हमारे साथियों को भी ।

सबक - 0 कुछ अहेम बातें

1: كِتَابٌ	أَنْزَلْنَاهُ	إِلَيْكَ	مُبَارَكٌ
(यह) किताब	हम ने उतारा है उसको	आप की तरफ़	बरकत वाली है
لِيَذَّبَرُوا	آيَاتِهِ	وَلِيَتَذَكَّرَ	أُولُوا الْأَلْبَابِ (ص: 29)
ता कि वह गौर करें	उस की आयात पर	और ता कि नसीहत पकड़ें	अक़ल वाले ।

2: وَلَقَدْ				يَسِّرْنَا		الْقُرْآنَ		لِلذِّكْرِ	
और अलबत्ता तहकीक		हम ने आसान किया		कुरआन को		ज़िक्र के लिये			
فَهَلْ				مِنْ مُذَكَّرٍ (قمر: 17، 22، 32، 40)					
तो है कोई				नसीहत हासिल करने वाला ।					

ذِكْر (1) याद करना, (2) नसीहत हासिल करना

3: خَيْرُكُمْ	مَنْ	تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ	وَعَلَّمَهُ (بخاری)
तुम में से बेहतरीन	(वह है) जो	कुरआन को सीखे	और सिखाए उस को ।

=====

1:	إِنَّمَا الْأَعْمَالُ	بِالنِّيَّاتِ	(بخاری)
	आमाल तो बस	नियतों पर है ।	

2:	رَبِّ	زِدْنِي	عِلْمًا (طه : 114)
	ऐ मेरे रब	ज़्यादा कर मझे	इल्म में ।

3:	الَّذِي	عَلَّمَ	بِالْقَلَمِ (العلق : 4)
	जिस ने	सिखाया	क़लम से

4:	أَيُّكُمْ	أَحْسَنُ	عَمَلًا (المالك : 2)
	कौन तुम में से	बहतर होगा	अमल में

सबक - 1 सूरह अल फतिहा (आयात -1-4)

* मै पनाह मे आता हूँ
अल्लाह की शैतान
मरदूद से ।

1. अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान रहेम करने वाला है ।
2. तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिये है जो तमाम जहानो का रब है ।
3. बहुत मेहेरबान रहेम करने वाला है ।
4. बदले के दिन का मालिक है ।

الرَّحِيمِ	مِنَ الشَّيْطَانِ	بِاللّٰهِ	أَعُوْذُ
जो मरदूद है	शैतान से	अल्लाह की	मै पनाह मे आता हूँ
*****سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ: بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ*****			
الرَّحِيْمِ (1)	الرَّحْمٰنِ	اللّٰهِ	بِسْمِ
रहेम करने वाला है ।	जो बहुत मेहेरबान	अल्लाह के	नाम से
الرَّحْمٰنِ (2)	رَبِّ	اللّٰهِ	الْحَمْدُ
तमाम जहानो का ।	रब है	अल्लाह के लिये	तमाम तारीफ़े
الرَّحْمٰنِ (3)	الرَّحِيْمِ	مَالِكِ	يَوْمِ
बदले का ।	दिन	मालिक है	रहेम करने वाला है ।
			बहुत मेहेरबान

ग्रामर: यह छः शब्द कुरआन करीम में 1295 बार आये हैं, इन की TPI के तरीके से अच्छी तरह प्रेक्टिस कर लीजिये । यह तरीका नीचे बताया जा रहा है ।

Detached / Personal Pronouns	No.	Per-son
वह	هُوَ	sr.
वह सब	هُمْ	pl.
आप	أَنْتَ	sr.
आप सब	أَنْتُمْ	pl.
मैं	أَنَا	sr.
हम	نَحْنُ	dl., pl.

पहले तीन बार इन शब्दों को तरजुमे (अनुवाद) के साथ पढ़िये यानी هُوَ (वह) هُمْ (वह सब) أَنْتَ (आप) أَنْتُمْ (आप सब) أَنَا (मैं) نَحْنُ (हम सब) । इस के बाद तरजुमा करने की ज़रूरत नहीं ।

सबक – 2 सूरह अल फ़तिहा (आयात -5-7)

5. हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ़ तुझ ही से मद चाहते हैं ।
6. हमें सीधे रास्ते की हिदायत दे ।
7. उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इन्आम किया, न उनका जिनपर ग़ज़ब किया गया और न उनका जो गुम्राह हुए ।

إِيَّاكَ	نَعْبُدُ	وَأِيَّاكَ	نَسْتَعِينُ (5)
सिर्फ़ तेरी ही	हम इबादत करते हैं	और सिर्फ़ तुझ ही से	हम मद चाहते हैं ।
اهْدِنَا	الصِّرَاطَ	الْمُسْتَقِيمَ (6)	
हमें हिदायत दे	रास्ते की	सीधे	
صِرَاطَ	الَّذِينَ	أَنْعَمْتَ	عَلَيْهِمْ
रास्ता	उन लोगों का	तू ने इन्आम किया	उन पर
غَيْرِ	الْمَغْضُوبِ	عَلَيْهِمْ	وَلَا الضَّالِّينَ (7)
न	ग़ज़ब किया गया	उन पर	और न जो गुम्राह हुए ।

ग्रामर:

Pronouns (with examples)	No.	Person
वह एक मुसलमान है هُوَ مُسْلِمٌ	sr.	3 rd
वह सब मुसलमान हैं هُمْ مُسْلِمُونَ	pl.	
आप एक मुसलमान हैं أَنْتَ مُسْلِمٌ	sr.	2 nd
आप सब मुसलमान हैं أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ	pl.	
मैं एक मुसलमान हूँ أَنَا مُسْلِمٌ	sr.	1 st
हम मुसलमान हैं نَحْنُ مُسْلِمُونَ	dl., pl.	

जमा (plural) बनाने का एक तरीका यह है कि आप शब्द के आगे **ون** या **ين** लगाएं जैसा नीचे दिया गया है ।

مُسْلِمٌ ← مُسْلِمُونَ, مُسْلِمِينَ	مُؤْمِنٌ ← مُؤْمِنُونَ, مُؤْمِنِينَ
صَالِحٌ ← صَالِحُونَ, صَالِحِينَ	كَافِرٌ ← كَافِرُونَ, كَافِرِينَ
مُشْرِكٌ ← مُشْرِكُونَ, مُشْرِكِينَ	مُنَافِقٌ ← مُنَافِقُونَ, مُنَافِقِينَ

अब आप बग़ैर तरजुमा किये प्रेक्टिस करते रहिये । हाथ का इशारा खुद बतादेगा कि आपकी मुराद क्या है । इशारों के इस्तमाल करने के कई फ़ायदों में से यह पहला अहम फ़ायदा है । इस तरह से न सिर्फ़ सीखना आसान होगा बल्कि दिलचस्प भी । चार पांच मिनट की प्रेक्टिस में आप यह छः अलफ़ाज़ जो कुरआन करीम में 1295 बार आये हैं, अच्छी तरह सीख लेंगे । हो सकता है कि आपको पहली बार इशारे करने में झिझक हो मगर कुरआन के अलफ़ाज़ याने शब्द सीखने में, अफ़ाल के विभिन्न सेगों और उनके विभिन्न अववाब सीखने में यह तरीका बहुत सफल साबित होगा । इन्शा अललाह, यह कहा जा सकता है कि कुरआन के तक़रीबन 25% अलफ़ाज़ को इन इशारों की मदद से आसानी से सीखा जा सकता है ।

नुक़ता शौक़ या नुक़ता खौफ़ और तालीमी नुक़ता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये):

सबक – 3 सूरह 103 अल अस्र

1. ज़माने की क़सम,
2. बेशक इन्सान ख़सारे में है,
3. सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए और एक दूसरे को हक़ की वसीयत की और सब्र की वसीयत (तलक़ीन) की।

*****سُورَةُ الْعَصْرِ: بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ*****					
وَالْعَصْرِ (1)	إِنَّ	الْإِنْسَانَ	لَفِي	خُسْرٍ (2)	إِلَّا
क़सम ज़माने की	बेशक	इन्सान	में	ख़सारे	सिवाए
الَّذِينَ	أَمَنُوا	وَعَمِلُوا	الصَّالِحَاتِ		
(उन के) जो	ईमान लाए	और उन्होंने ने अमल किए	नेक		
وَتَوَاصَوْا	بِالْحَقِّ	وَتَوَاصَوْا	بِالصَّبْرِ (3)		
और एक दूसरे को वसीयत की	हक़ की	और एक दूसरे को वसीयत की	सब्र की।		

ग्रामर:

book ... + كِتَابٌ	way of life ... + دِينٌ	رَبٌّ + ...	Attached/Possessive	No.	Person
उसकी किताब	उसका मज़हब / तरीका ज़िन्दगी	उसका रब	उसका	sr.	3 rd
उनकी किताब	उनका मज़हब / तरीका ज़िन्दगी	उनका रब	उनका	pl.	
आपकी किताब	आपका मज़हब / तरीका ज़िन्दगी	आपका रब	आपका	sr.	2 nd
आप सब की किताब	आप सब का मज़हब / तरीका ज़िन्दगी	आप सब का रब	आप सब का	pl.	
मैरी किताब	मेरा मज़हब / तरीका ज़िन्दगी	मेरा रब	मेरा	sr.	1 st
हमारी किताब	हमारा मज़हब / तरीका ज़िन्दगी	हमारा रब	हमारा	dl., pl.	

स्त्री लिंग या औरत के लिये :

उसकी किताब: كِتَابُهَا, उसका दीन: دِينُهَا, उसका रब: رَبُّهَا, वह: هِيَ

स्त्री लिंग बनाना हो तो शब्द के आखिर में ة लगाएं। उसकी जमा (plural) बनाने का तरीका यह है कि आप शब्द के आखिर में ة हटा कर ا लगाएं जैसा नीचे दिया गया है।

مُؤْمِنٌ ← مُؤْمِنَةٌ	مُؤْمِنَةٌ
كَافِرٌ ← كَافِرَةٌ	كَافِرَةٌ
مُنَافِقٌ ← مُنَافِقَةٌ	مُنَافِقَةٌ
مُسْلِمٌ ← مُسْلِمَةٌ	مُسْلِمَةٌ
صَالِحٌ ← صَالِحَةٌ	صَالِحَةٌ
مُشْرِكٌ ← مُشْرِكَةٌ	مُشْرِكَةٌ

नुक़ता शौक़ या नुक़ता खौफ़ और तालीमी नुक़ता :

सबक - 4 सूरह 110 अल नस्र

1. जब अल्लाह की मदद आजाए और फ़तह (हो जाए)
2. और आप देखें लोग दाखिल हो रहे हैं अल्लाह के दिन में फ़ौज दर फ़ौज,
3. पस अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकी बयान करें और उस से बख़्शिश तलब करें, वेशक वह बड़ा तौवा कुबूल करने वाला है।

سُورَةُ النَّصْرِ: بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ *****				
إِذَا	جَاءَ	نَصْرُ اللَّهِ	وَالْفَتْحُ (1)	
जब	आजाए	अल्लाह की मदद	और फ़तह	
وَرَأَيْتَ	النَّاسَ	يَدْخُلُونَ	فِي دِينِ اللَّهِ	أَفْوَاجًا (2)
और आप (स) देखें	लोग	दाखिल हो रहे हैं	अल्लाह के दिन में	फ़ौज दर फ़ौज
فَسَبِّحْ	بِحَمْدِ	رَبِّكَ		
पस पाकी बयान करें	तारीफ़ के साथ	अपने रब की		
وَاسْتَغْفِرْهُ	إِنَّهُ	كَانَ تَوَّابًا (3)		
और उस से बख़्शिश तलब करें।	वेशक वह	बड़ा तौवा कुबूल करने वाला है।		

ग्रामर:

नीचे दिये गये चार शब्द (हुरूफ़े जर) के माने याद रखने लिये उन के उदाहरण को भी अच्छी तरह याद रखिये। ل: لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينَ، مِنْ: أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ، عَنْ: عَنِ النَّعِيمِ، رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ مَعَ: إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ यह याद रहे कि इन शब्दों के दूसरे माने भी हो सकते हैं। इस की तफ़सील नीचे दी गई है।	साथ	से, बारे में	से, साथ	लिये
	مَعَهُ	عَنْهُ	مِنْهُ	لَهُ
	مَعَهُمْ	عَنْهُمْ	مِنْهُمْ	لَهُمْ
	مَعَكَ	عَنْكَ	مِنْكَ	لَكَ
	مَعَكُمْ	عَنْكُمْ	مِنْكُمْ	لَكُمْ
	مَعِيَ	عَنِّي	مِنِّي	لِي
	مَعَنَا	عَنَّا	مِنَّا	لَنَا
	مَعَهَا	عَنْهَا	مِنْهَا	لَهَا

इन शब्दों का तरजुमा अस्ल जुबान और तरजुमे की जुबान के हिसाब से होता है। इस के लिये हर जुबान का अपना तरीका है जैसे

آمَنْتُ بِاللَّهِ I believed in Allah; मैं अल्लाह पर ईमान लाया

ये तीनों जुमले (वाक्य) तीन जुबानों में एक ही बात को ब्यान कर रहे हैं मगर हर जुबान में एक अलग ही शब्द इस्तेमाल हुआ है।

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता :

सबक – 5 इआदा REVISION

अब तक जो कुछ पढ़ा है उसका इआदा कीजिये ।

ग्रामर : (नया सबक):

नीचे दिये गये चार शब्द के माने याद रखने लिये उन की मिसालों (उदाहरणों) को भी अच्छी तरह याद रखिये । ب: بِسْمِ اللَّهِ فِي: فِي سَبِيلِ اللَّهِ عَلَى: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ إِلَى: إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ये याद रहे कि जब यह हरूफ़ जर, फ़ेल, इस्म फ़ाइल या इस्म मफ़ऊल के साथ आये तो उसके मानि बदल सकते हैं ।	तरफ़	पर	में	से, साथ
	إِلَيْهِ	عَلَيْهِ	فِيهِ	بِهِ
	إِلَيْهِمْ	عَلَيْهِمْ	فِيهِمْ	بِهِمْ
	إِلَيْكَ	عَلَيْكَ	فِيكَ	بِكَ
	إِلَيْكُمْ	عَلَيْكُمْ	فِيكُمْ	بِكُمْ
	إِلَيَّ	عَلَيَّ	فِيَّ	بِي
	إِلَيْنَا	عَلَيْنَا	فِينَا	بِنَا
	إِلَيْهَا	عَلَيْهَا	فِيهَا	بِهَا

कभी इस शब्द (हरफ़-जर) की ज़रूरत अरबी में पड़ती है मगर दूसरी जुबान में नहीं । नीचे इंगलिश की मिसाल दी गई है ।

entering the religion of Allah	يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ
Forgive me	اغْفِرْ لِي

कभी इसकी ज़रूरत अरबी में नहीं पड़ती मगर दूसरी जुबान में पड़ती है ।

मैं बख़्शिश माँगता हूँ अल्लाह से	أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ
और मुझ पर रहेम फ़रमा	وَارْحَمْنِي

सबक – 6 सूरह 112 अल इखलास

1. कह दीजिए वह अल्लाह एक है,
2. अल्लाह बेनियाज़ है,
3. न उस ने (किसी को) जना और न वह जना गया,
4. और उस का कोई हमसर नहीं ।

***** سورة الإخلاص : بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ *****				
قُلْ	هُوَ	اللَّهُ	أَحَدٌ (1)	اللَّهُ
कह दीजिए	वह	अल्लाह	एक है ।	अल्लाह
الصَّمَدُ (2)	لَمْ يَلِدْ	وَلَمْ يُولَدْ (3)	يُولَدُ	
बेनियाज़ है ।	न उस ने (किसी को) जना	और न	वह जना गया ।	
وَلَمْ يَكُنْ	لَهُ	كُفُوًا	أَحَدٌ (4)	
और नहीं है	उस का	हमसर	कोई ।	

ग्रामर: फ़ेले-माज़ी के दिये गये छः सेगों की TPI के तरीके से अच्छी तरह प्रेक्टिस कीजिये । यह तरीका नीचे बताया जा रहा है ।

1. जब आप فَعَلَ (उस ने किया) कहें तो सीधे हाथ की तशह-हुद की उँगली से दाएँ तरफ़ इशारा करें, गोया वह आदमी आपकी दाएँ तरफ़ बैठा हुआ है । फिर जब आप فَعَلُوا (उन्होंने किया) कहें तो सीधे हाथ की चारों उँगलियों से दाएँ तरफ़ इशारा करें ।	Past Tense فَعَلَ مَاضِي	Person
	उस ने किया فَعَلَ	3 rd
2. जब आप فَعَلْتَ (आपने किया) कहें तो सीधे हाथ की तशह-हुद की उँगली से सामने की तरफ़ बैठे हुए आदमी की तरफ़ इशारा करें । फिर जब आप فَعَلْتُمْ (आप सबने किया) कहें तो सीधे हाथ की चारों उँगलियों से सामने इशारा करें । अगर क्लास चल रही हो तो उसताद पढ़ने वालों की तरफ़ और पढ़ने वाले उसताद की तरफ़ इशारा करें ।	उन सब ने किया فَعَلُوا	
3. जब आप فَعَلْتُ (मैं ने किया) कहें तो सीधे हाथ की तशह-हुद की उँगली से खुद की तरफ़ इशारा करें । फिर जब आप فَعَلْنَا (हमने किया) कहें तो सीधे हाथ की चारों उँगलियों से खुद की तरफ़ इशारा करें ।	आप ने किया فَعَلْتَ	2 nd
	आप सब ने किया فَعَلْتُمْ	
	मैं ने किया فَعَلْتُ	1 st
	हम सब ने किया فَعَلْنَا	

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक - 7 सूरह 113 अल फ़लक

1. कह दीजिए, मैं पनाह में आता हूँ सुबह के रब की,
2. उस के शर से जो उस ने पैदा की,
3. और अन्धेरे के शर से, जब वह छा जाए,
4. और गिरहों में फूँके मारने वालियों के शर से,
5. और शर से हसद करने वाले के जब वह हसद करे ।

***** سورة الفلق : بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ *****			
قُلْ	أَعُوذُ	بِرَبِّ	الْفَلَقِ (1)
कह दीजिए	मैं पनाह में आता हूँ	रब की	सुबह के ।
مِنْ	شَرِّ	مَا	خَلَقَ (2)
से	शर	(उस के) जो	उस ने पैदा किया
وَمِنْ شَرِّ	غَاسِقٍ	إِذَا	وَقَبَ (3)
और शर से	अन्धेरे के	जब	(वह) छा जाए
وَمِنْ شَرِّ	النَّفَّاثَاتِ	فِي الْعُقَدِ (4)	
और शर से	फूँके मारने वालियों के	गिरहों में	
وَمِنْ شَرِّ	حَاسِدٍ	إِذَا	حَسَدَ (5)
और शर से	हसद करने वाले के	जब	वह हसद करे

ग्रामर: फ़ेल-माज़ी के सेगों के fonts को italics बनादिया गया है । काम हो गया इसलिये इसके अलफ़ाज़ झुका दिये गये :

• फ़ेल माज़ी (गायब, हाज़िर या मुतकल्लिम के लिये वाहिद याने एक, मुसन्ना याने दो, जमा) के सेगें अपनी मुख़तलिफ़ (विभिन्न) हालतों में अपने आख़री हरूफ़ (शब्दों) को बदलते रहते हैं । इन हरूफ़ की तबदीली से यह पता चलता है कि यह फ़ेल वाहिद है या जमा, हाज़िर (सामने वाला) है या मुतकल्लिम (बोलने वाला) वगैरह । इसी बात को आसानी से याद कराने के लिये तसवीरों से समझाने की कोशिश की गई है । अगर आप किसी सड़क पर खड़े हों तो आपको जाने वाली कार, ट्रक या जीप का सिर्फ़ पिछला हिस्सा नज़र आता है । पिछले हिस्से को देख कर आप कह सकते हैं कि यह कौन सी चीज़ थी जो चली गई । अगर आप रनवे पर खड़े हों तो उड़ते हुए हवाई जहाज़ (जो चला गया गोया माज़ी हो गया) का सिर्फ़ पिछला हिस्सा नज़र आएगा, जिसकी दुम पर यह तबदीलियाँ وا ت، ثم، ت، نا बताई गई हैं ।	Past Tense فَعْلٌ مَاضِي	Person
	उस ने किया فَعَلَ	3 rd
	उन सब ने किया فَعَلُوا	
	आप ने किया فَعَلْتَ	2 nd
	आप सब ने किया فَعَلْتُمْ	
	मैं ने किया فَعَلْتُ	1 st
	हम ने किया فَعَلْنَا	

नुक़ता शौक़ या नुक़ता खौफ़ और तालीमी नुक़ता (जगह न हो तो इस सफ़ह के पीछे नोट कीजिये)

सबक – 9 इआदा

अब तक जो कुछ पढ़ा है उसका इआदा (repeat) कीजिये ।

ग्रामर: फ़ेले-माज़ी और फ़ेल मज़ारे की TPI के साथ प्रेक्टिस कीजिये ।

Imperfect tense فَعْلٌ مُّضَارِعٌ	Past Tense فَعْلٌ مَّاضِي	Per- son
वह करता है يَفْعَلُ	उस ने किया فَعَلَ	3 rd
वह करते हैं يَفْعَلُونَ	उन सब ने किया فَعَلُوا	
आप करते हैं تَفْعَلُ	आप ने किया فَعَلْتَ	2 nd
आप सब करते हैं تَفْعَلُونَ	आप सब ने किया فَعَلْتُمْ	
मैं करता हूँ أَفْعَلُ	मैं ने किया فَعَلْتُ	1 st
हम करते हैं نَفْعَلُ	हम ने किया فَعَلْنَا	

सबक - 10 सूरह 109 अल काफिरून

1. कह दीजिए - ऐ काफ़िरो!
2. मैं इबादत नहीं करता जिस की तुम इबादत करते हो।
3. और न तुम! इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ,
4. और न मैं इबादत करने वाला हूँ जिस की तुम इबादत करते हो,
5. और न तुम इबादत करने वाले जिस की मैं इबादत करता हूँ।
6. तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मेरे लिए मेरा दीन।

***** سُورَةُ الْكَافِرُونَ: بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ *****					
قُلْ	يَا أَيُّهَا	الْكَافِرُونَ (1)	لَا أَعْبُدُ	مَا	تَعْبُدُونَ (2)
कह दीजिए	ऐ	काफ़िरो !	मैं इबादत करता नहीं	जिस की	तुम इबादत करते हो
وَلَا أَنْتُمْ	عَابِدُونَ	مَا	أَعْبُدُ (3)		
और न तुम	इबादत करने वाले हो	जिस की	मैं इबादत करता हूँ		
وَلَا أَنَا	عَابِدٌ	مَا	عَبَدْتُمْ (4)		
और न मैं	इबादत करने वाला	जिस की	तुम ने इबादत की		
وَلَا أَنْتُمْ	عَابِدُونَ	مَا	أَعْبُدُ (5)		
और न तुम	इबादत करने वाले	जिस की	मैं इबादत करता हूँ		
لَكُمْ	دِينُكُمْ	وَلِي	دِينٍ (6)		
तुम्हारे लिए	तुम्हारा दीन	और मेरे लिए	मेरा दीन		

ग्रामर: फ़ेल के साथ ज़माइर, मफ़ऊल-विही (objects) बन जाते हैं। एक फ़ेल के साथ मिसाल (उदाहरण) देखिये।

उस (अल्लाह) ने पैदा किया ... + خَلَقَ	Attached/Possessive (with a VERB)	No.	Person
पैदा किया उस को خَلَقَهُ	उस को هـ-- هـ--	sr.	3 rd
पैदा किया उन को خَلَقَهُمْ	उन को هُم-- هُم--	pl.	
पैदा किया आप को خَلَقَكَ	आप को ك--	sr.	2 nd
पैदा किया आप सब को خَلَقَكُمْ	आप सब को كُمْ--	pl.	
पैदा किया मुझ को خَلَقْنِي	मुझ को نِي-- ***	sr.	1 st
पैदा किया हम को خَلَقْنَا	हम को نَا--	dl., pl.	

अमर व नहीं की TPI के साथ प्रेक्टिस कीजिये।

1. कहते वक़्त तशह-हुद की उँगली से सामने की तरफ़ इस तरह (हाथ को थोड़ा ऊपर से नीचे की तरफ़ लाते हुए) इशारा करें जैसे आप सामने वाले को हुक्म दे रहे हों। اَفْعَلُوا के लिये यही इशारा चारों उँगलियों से किया जाये।	Negative Imperative نَهْيٍ	Imperative اَمْرٍ
2. कहते वक़्त तशह-हुद की उँगली से सामने की तरफ़ इस तरह (हाथ को बाएँ से दाएँ तरफ़ लाते हुए) इशारा करें जैसे आप सामने वाले को मना कर रहे हों। لَا تَفْعَلُوا के लिये यही इशारा चारों उँगलियों से किया जाये।	मत कर لَا تَفْعَلْ	कर اَفْعَلْ
	मत करो لَا تَفْعَلُوا	करो اَفْعَلُوا

नुक़ता शौक़ या नुक़ता खौफ़ और तालीमी नुक़ता (जगह न हो तो इस सफ़ह के पीछे नोट कीजिये)

सबक – 11 वजू (नमाज़ के अज़कार)

* अल्लाह के नाम से. * मैं गवाही देता हूँ कि कोई (हकीकी) माबूद नहीं है सिवाए अल्लाह के वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम) उसके बन्दे और उसके रसूल हैं । ऐ अल्लाह! बना दे मुझे खूब तौबा करने वालों में से और बना दे मुझे पाक साफ़ रहने वालों में से ।	***** वजू से पहले की दुआ (Wudu) *****					
	بِسْمِ اللَّهِ					
				अल्लाह के ।		नाम से
	***** वजू के बाद की दुआ (Wudu) *****					
	أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ					
	अल्लाह के		सिवाए	कोई माबूद	नहीं है	कि मैं गवाही देता हूँ
	وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ					
	उसका		नहीं कोई शरीक		वह अकेला है,	
	وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ					
	और उसके रसूल हैं ।		उसके बन्दे	मुहम्मद (स.)	कि	और मैं गवाही देता हूँ
اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ						
खूब तौबा करने वालों (मे) से		बना दे मुझे		ऐ अल्लाह!		
وَجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ						
पाक साफ़ रहने वालों (मे) से			और बना दे मुझे			

ग्रामर:

एक ज़माने में मुसलमान सारी दुनिया को इल्म, हुनर और टेक्नालोजी देने वाले होते थे, करने वाले होते थे । फ़ाइल (करने वाला) कहते वक़्त सीधे हाथ से देने का इशारा कीजिये । लेने वाला हाथ वह है जिस की मदद की गई, उस पर असर पड़ा, मफ़ऊल (जिस पर असर पड़ा) कहते हुऐ लेने वाले हाथ का इशारा कीजिये । और आख़िर में फ़ैल (काम का नाम, काम करना) कहते वक़्त हाथ की मुट्ठी बना कर कुव्वत का इशारा कीजिये । ये सारे इशारे एक नए आदमी के लिये कुछ अजीब से लगते हैं मगर याद रखने की लिये इन इशारों से काम लीजिये । जुवान सीखने के लिये अपने सारे वजूद को (Total physical interaction) जितना इस्तमाल करेंगे, उतना ही फायदा होगा । इन्शाअल्लाह आप खुद देखेंगे कि इस तरीक़े से किस तरह आसानी से यह सारे सेगे याद हो जाती हैं	active participle; passive participle, and verbal noun
	करने वाला فَاعِل
	वह जिस पर असर पड़ा مَفْعُول
	करना, काम का नाम فِعْل
	فَاعِلُونَ، فَاعِلِينَ pl.
	مَفْعُولُونَ، مَفْعُولِينَ pl.

नुक़ता शौक़ या नुक़ता खौफ़ और तालीमी नुक़ता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक – 12 इक़ामत और सना

अल्लाह सबसे बड़ा है।
अल्लाह सबसे बड़ा है।
मैं गवाही देता हूँ कि कोई
हकीकी माबूद नहीं है सिवाए
अल्लाह के, मैं गवाही देता
हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहो
अलैहि वसल्लम अल्लाह के
रसूल हैं, आओ नमाज़ की
तरफ़, आओ कामयाबी की
तरफ़, तहकीक़ (यकीनन)
खड़ी हो गई नमाज़,
(यकीनन) खड़ी हो गई
नमाज़, अल्लाह सबसे बड़ा
है, अल्लाह सबसे बड़ा है,
नहीं है कोई माबूद सिवाए
अल्लाह के =====
ऐ अल्लाह तू पाक है और
तेरे ही लिए तारीफ़ है और
तेरा नाम बरकत वाला है,
और तेरी बुजुर्गी बुलंद व
बाला है, और तेरे सिवा
कोई (सच्चा) माबूद नहीं,

*** इक़ामत ***				
اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ ۞		أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ۞		
अल्लाह सब से बड़ा है । अल्लाह सब से बड़ा है ।		मैं गवाही देता हूँ कि कोई माबूद नहीं है सिवाए अल्लाह के		
أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ ۞		حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ ۞		
मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल है ।		आओ तरफ	नमाज़ की ।	
حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ۞	قَدْ	قَامَتِ الصَّلَاةُ ۞	قَدْ قَامَتِ الصَّلَاةُ ۞	
कामयाबी की	तहकीक (यकीनन)	खड़ी हो गई नमाज़	खड़ी हो गई नमाज़	तहकीक (यकीनन)
आओ तरफ				
اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ ۞		لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ۞		
अल्लाह सब से बड़ा है । अल्लाह सब से बड़ा है ।		नहीं है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के		
***** सना *****				
سُبْحَانَكَ	اللَّهُمَّ	وَبِحَمْدِكَ	وَتَبَارَكَ	اسْمُكَ
पाक है तू	ऐ अल्लाह	और तारीफ है तेरे लिए	और बरकत वाला है	तेरा नाम
وَتَعَالَى جَدُّكَ	وَلَا إِلَهَ	غَيْرُكَ		
और बुलंद व वाला है तेरी बुजुर्गी	और नहीं कोई माबूद	सिवाए तेरे		

ग्रामर: ¹⁰⁸فَعْل के उन 21 सेगों की प्रैक्टिस कीजिये जो नीचे दिये गये हैं। आख़री दो सेगे वाहिद मुअन्नस यानी एक औरत के लिये हैं। उन में दो असमा (फ़ाइल और मफ़ऊल) और मसदर यानी काम का नाम (फ़ेल) भी दिया गया है। तफ़सीली टेबल इस किताब के आख़िर (Appendix) में दिया गया है। उस टेबल में कई सेगे दिये गये हैं मगर वह बाद में सीखने के लिये हैं। 108 का अदद यह बताता है कि कुरआन मजीद में यह फ़ेल अपनी मुखतलिफ़ सूरतों में 108 बार आया है।

मुअन्नस (औरत) के सेगों के लिये इशारे के तौर पर बाएँ हाथ का इस्तमाल कीजिये। याद रखिये कि दाएँ हाथ का इस्तमाल हम ने मुज़क्कर (मर्द) के इशारों के लिये किया था। मक्सद सिर्फ़ सिखाना है न कि मुअन्नस के साथ कोई इमतिyazी सलूक। यह भी याद रहे कि कुरआन में वाहिद मुअन्नस का सेगा दूसरे मुअन्नस के सेगों के मुकाबले में ज़्यादा इसतेमाल हुआ है।

فَعْلٌ، فَعَلُوا، فَعَلْتَ، فَعَلْتُمْ، فَعَلْنَا
يَفْعَلُونَ، تَفْعَلُونَ، أَفْعَلُ، نَفْعَلُ
افْعَلُوا، لَا تَفْعَلُ، لَا تَفْعَلُوا
فَاعِلٌ، مَفْعُولٌ، فِعْلٌ

(مِي رَبُّهَا , उसका रब , فَعَلْتَ , उस औरत ने किया , تَفْعَلُ , वह करती है)

नुक़ता शौक़ या नुक़ता खौफ़ और तालीमी नुक़ता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक – 13 रुकू, सजुद व तशहहुद (नमाज़ के अज़कार)

***** रुकू के अज़कार / raising up *****				
मेरा रब पाक है अज़मत वाला है ।	سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ			
	पाक है	मेरा रब	अज़मत वाला	.
सुन ली अल्लाह ने जिसने उसकी तारीफ़ की ।	سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ			
ऐ हमारे रब तेरे ही लिए हर तरह की तारीफ़ है ।	हर तरह की तारीफ़ है	तेरे ही लिए	ऐ हमारे रब	तारीफ़ की उसकी
मेरा रब पाक है जो सब से बुलंद है ।	***** सजदा के अज़कार (Prostration) *****			
	سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى			
	पाक है	मेरा रब	सबसे बुलंद	
***** तशहहुद *****				
सभी कौली (जुवान की), बदनी और माली इबादतें अल्लाह ही के लिए हैं,	التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ			
	सभी कौली इबादतें	अल्लाह ही के लिए हैं,	और सभी बदनी इबादतें	और सभी माली इबादतें
सलाम हो आप पर ऐ नबी और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों	السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ			
	सलाम हो	आप पर	ऐ नबी	और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों
सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर ।	السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ			
	सलाम हो	हम पर	और ऊपर	अल्लाह के बंदों
मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई (हकीक़ी) माबूद नहीं	أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ			
	मैं गवाही देता हूँ कि	नहीं कोई माबूद	सिवाए अल्लाह के	
और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बंदे और उसके रसूल है ।	وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ			
	और मैं गवाही देता हूँ कि	मुहम्मद (स.)	उसके बंदे	और उसके रसूल (हैं)

ग्रामर: 29 **فَتَحَ** (1a) के नीचे दिये गये 21 अहेम (मुख्य) सेगों की प्रैक्टिस कीजिये । आख़री दो सीरे वाहिद मुअन्नस के हैं । 29 का अदद यह बताने के लिये है कि कुरआन मजीद में यह फ़े़ल अपनी मुखतलिफ़ (विभिन्न) सूरतों में 29 बार आया है । 1a फ़े़ल की किसम (باب فَتَحَ) को बताता है । (**فَتَحَ** : उस ने खोला ; **جَعَلَ** : उस ने बनाया)

فَتَحَ، فَتَحُوا، فَتَحْتَ، فَتَحْتُمْ، فَتَحْنَا، فَتَحْنَا، يَفْتَحُ، يَفْتَحُونَ، تَفْتَحُ، تَفْتَحُونَ، أَفْتَحُ، أَفْتَحُونَ، نَفْتَحُ، نَفْتَحُونَ، إِفْتَحُ، إِفْتَحُوا، لَا تَفْتَحُ، لَا تَفْتَحُوا فَاتِحٌ، مَفْتُوحٌ، فَتَحَ (هِيَ فَتَحَتْ، تَفْتَحُ)

جَعَلَ، جَعَلُوا، جَعَلْتَ، جَعَلْتُمْ، جَعَلْنَا، جَعَلْنَا، يَجْعَلُ، يَجْعَلُونَ، تَجْعَلُ، تَجْعَلُونَ، أَجْعَلُ، أَجْعَلُونَ، نَجْعَلُ، نَجْعَلُونَ، إَجْعَلُ، إَجْعَلُوا، لَا تَجْعَلُ، لَا تَجْعَلُوا جَاعِلٌ، مَجْعُولٌ، جَعَلَ (هِيَ جَعَلَتْ، تَجْعَلُ)

नुक़ता शौक़ या नुक़ता खौफ़ और तालीमी नुक़ता (जगह न हो तो इस सफ़े़ह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक – 14 दरूद (नमाज़ के अज़कार)

ऐ अल्लाह मुहम्मद
(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
) पर और मुहम्मद (स.) की
आल पर दरूद (रहमत) भेज
जैसे तूने इब्राहीम
अलैहिस्सलाम पर और
इब्राहीम (अ.) की आल पर
रहमत भेजी.

बेशक तू तारीफ़ के काबिल
है वुजुर्गी वाला है।

ऐ अल्लाह मुहम्मद (स.)
और मुहम्मद (स.) की आल
पर बरकत अता फ़रमा जैसे
तूने इब्राहीम (अ.) पर और
इब्राहीम (अ.) की आल पर
बरकत अता की.

बेशक तू तारीफ़ के काबिल
वुजुर्गी वाला है।

***** दरूद (Sending prayers on the Prophet, pbuh) *****				
اللَّهُمَّ	صَلِّ	عَلَى مُحَمَّدٍ	وَعَلَى آلِ	مُحَمَّدٍ
ऐ अल्लाह	दरूद (रहमत) भेज	मुहम्मद (स.) पर	और आल पर	मुहम्मद (स.) की,
كَمَا صَلَّيْتَ	عَلَى إِبْرَاهِيمَ	وَعَلَى آلِ	إِبْرَاهِيمَ	
जैसे भेजी रहमत तू ने	इब्राहीम पर	और आल पर	इब्राहीम की,	
إِنَّكَ	حَمِيدٌ	مَجِيدٌ		
बेशक तू है	तारीफ़ के काबिल	वुजुर्गी वाला है।		
اللَّهُمَّ	بَارِكْ	عَلَى مُحَمَّدٍ	وَعَلَى آلِ	مُحَمَّدٍ
ऐ अल्लाह	बरकत अता फ़रमा	मुहम्मद (स.) पर	और आल पर	मुहम्मद (स.) की,
كَمَا بَارَكْتَ	عَلَى إِبْرَاهِيمَ	وَعَلَى آلِ	إِبْرَاهِيمَ	
जैसे	तू ने बरकत अता की	इब्राहीम पर	और आल पर	इब्राहीम की,
إِنَّكَ	حَمِيدٌ	مَجِيدٌ		
बेशक तू	तारीफ़ के काबिल	वुजुर्गी वाला है।		

ग्रामर: 92 (1b) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये। आखरी दो सेगें वाहिद मुअन्नस के हैं। 92 का अदद यह बताने के लिये है कि कुरआन मजीद में यह फ़ैल अपनी मुखतलिफ़ सूरतों में 92 बार आया है। 1b फ़ैल की किसम (باب نُصَرَ) को बताता है। इस से पहले आपने فَتَحَ, يَفْتَحُ, اِفْتَحَ (यानी 1a) के अफ़आल सीखे। यह बाव نُصَرَ (1b) है। बुनियादी गरदान वही فَعَلَ की है, फ़र्क सिर्फ़ ज़ेर ज़बर पेश का है। यहाँ اِنْصَرَ, يَنْصُرُ, اُنْصُرُ के बजाये نُصَرَ, اُنْصُرُ, يَنْصُرُ पेश है। अरबी अफ़आल ज़्यादा तर इसी वज़न पर आते हैं। (نُصَرَ : उसने मदद की, خَلَقَ : उसने पैदा किया)।

نُصَرَ، اُنْصُرُوا، نَصَرْتُ، نَصَرْتُمْ، نَصَرْنَا، يَنْصُرُونَ، تَنْصُرُونَ، اُنْصُرْ، اُنْصُرْ، اُنْصُرْ
نَاصِرٌ، اُنْصُرُوا، لَا تَنْصُرْ، لَا تَنْصُرُوا، نَاصِرٌ، مَنْصُورٌ، نَصْرٌ، (نَصَرْتُ، تَنْصُرْ)

248 خَلَقَ (1a) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये। आखरी दो सेगें वाहिद मुअन्नस के हैं।

خَلَقَ، خَلَقُوا، خَلَقْتَ، خَلَقْتُمْ، خَلَقْنَا، يَخْلُقُونَ، تَخْلُقُونَ، اَخْلُقْ، اَخْلُقْ
اَخْلُقْ، اَخْلُقُوا، لَا تَخْلُقْ، لَا تَخْلُقُوا، خَالِقٌ، مَخْلُوقٌ، خَلَقَ، (خَلَقْتَ، تَخْلُقْ)

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक – 15 दरूद के बाद (नमाज़ के अज़कार)

ऐ अल्लाह वेशक मैंने अपनी जान पर बहुत ज़्यादा जुल्म किया है और तेरे सिवा (कोई भी) गुनाहों को नहीं बख़्श सकता, वस मुझको बख़्श दे अपनी खास बख़्शिश से और मुझ पर रहम फ़रमा। वेशक तू ही बख़्शने वाला बेहद रहम वाला है।

***** दरूद के बाद की दुआ / before the Ending Salam *****				
اللَّهُمَّ	إِنِّي	ظَلَمْتُ	نَفْسِي	ظُلْمًا كَثِيرًا
ऐ अल्लाह	मैं	(मैं ने) जुल्म किया	अपनी जान पर	जुल्म बहुत ज़्यादा
وَلَا	يَغْفِرُ	الدُّنُوبَ	إِلَّا أَنْتَ	فَاغْفِرْ لِي
और नहीं	बख़्श सकता	गुनाहों को	सिवाए तेरे	वस बख़्श दे मुझ को
مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ			وَأَرْحَمَنِي	
अपनी खास बख़्शिश से			और मुझ पर रहम फ़रमा	
إِنَّكَ أَنْتَ	الْعَفُورُ	الرَّحِيمُ		
वेशक तू ही	बख़्शने वाला	बेहद रहम वाला है		

ग्रामर: ¹⁶³ ذَكَرَ (1b) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये। (¹⁶³ ذَكَرَ : उस ने याद किया)

ذَكَرَ، ذَكُرُوا، ذَكَرْتُ، ذَكَرْتُمْ، ذَكَرْتُ، ذَكَرْنَا، يَذْكُرُ، يَذْكُرُونَ، تَذْكُرُ، تَذْكُرُونَ، أَذْكُرُ، نَذْكُرُ
أُذْكُرُ، أَذْكُرُوا، لَا تَذْكُرُ، لَا تَذْكُرُوا، ذَاكِرٌ، مَذْكُورٌ، ذِكْرٌ، (ذَكَرْتُ، تَذْكُرُ)

⁴⁶¹ كَفَرَ (1b) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये। (⁴⁶¹ كَفَرَ : उसने इनकार किया, ना शुकरी की)।

كَفَرَ، كَفَرُوا، كَفَرْتُ، كَفَرْتُمْ، كَفَرْتُ، كَفَرْنَا، يَكْفُرُ، يَكْفُرُونَ، تَكْفُرُ، تَكْفُرُونَ، أَكْفُرُ، نَكْفُرُ
أُكْفُرُ، أَكْفُرُوا، لَا تَكْفُرُ، لَا تَكْفُرُوا، كَافِرٌ، مَكْفُورٌ، كُفْرٌ، (كَفَرْتُ، تَكْفُرُ)

नुक़ता शौक़ या नुक़ता खौफ़ और तालीमी नुक़ता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक – 16 दुआएँ

ऐ अल्लाह मैं तेरे ही नाम से मरता और जीता हूँ ।

=====

हर किस्म की तारीफ और शुक्र अल्लाह ही के लिए है जिसने हमको ज़िंदा किया, हमको मौत देने के बाद, और उसी की तरफ उठ कर जाना है ।

* अल्लाह के नाम से

* अल्लाह के नाम से इसके शुरू में और इसके आखिर में ।

* सब तारीफ और शुक्र अल्लाह के लिए है जिसने हमें खिलाया और पिलाया, और मुसलमान (यानी बात को सुन्ने वाला) बनाया ।

***** सोने के वक़्त की दुआ *****				
اللَّهُمَّ	بِاسْمِكَ	أَمُوتُ	وَأَحْيَا	
ऐ अल्लाह	तेरे नाम से	मैं मरता हूँ	और मैं जीता हूँ ।	
***** नींद से जागने पर *****				
الْحَمْدُ	لِلَّهِ	الَّذِي	أَحْيَانَا	
तारीफ और शुक्र	अल्लाह के लिए	जिसने	ज़िंदा किया हमको	
بَعْدَ مَا	أَمَاتَنَا	وَالِيهِ	النُّشُورُ	
बाद	मौत देने के हमको	और उसी की तरफ	उठ कर जाना है ।	
***** खाना शुरू करते वक़्त *****				
بِسْمِ اللَّهِ	يا अगर शुरू में कहना भूल जाए तो कहे	بِسْمِ اللَّهِ	فِي أَوَّلِهِ	وَأَخْرِهِ
		अल्लाह के नाम से	इसके शुरू में	और इसके आखिर में
***** खाना खाने के बाद *****				
الْحَمْدُ	لِلَّهِ	الَّذِي	أَطْعَمَنَا	وَسَقَانَا
तारीफ व शुक्र	अल्लाह के लिए है	जिस ने	खिलाया हमें	और पिलाया हमें
وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ				
और बनाया हमें			इस्लाम लाने वालों (में) से	

ग्रामर: رَزَقَ¹²² (1b), دَخَلَ⁷⁸ (1b), and عَبَدَ¹⁴³ (1b) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये ।

(رَزَقَ : उसने रिज़क दिया, دَخَلَ : वह दाखिल हुआ, عَبَدَ : उसने इबादत की)

رَزَقَ، رَزَقُوا، رَزَقْتُ، رَزَقْتُمْ، رَزَقْنَا، يَرِزُقُونَ، تَرِزُقُونَ، أَرِزُقُ، تُرِزُقُونَ،
أَرِزُقُ، أَرِزُقُوا، لَا تَرِزُقُ، لَا تَرِزُقُوا، رَازِقٌ، مَرِزُوقٌ، رِزْقٌ، (رَزَقْتُ، تَرِزُقُ)

دَخَلَ، دَخَلُوا، دَخَلْتُ، دَخَلْتُمْ، دَخَلْنَا، يَدْخُلُونَ، تَدْخُلُونَ، أَدْخُلُ، تُدْخِلُونَ،
أَدْخُلُ، أَدْخِلُوا، لَا تَدْخُلُ، لَا تَدْخِلُوا، دَاخِلٌ، مَدْخُولٌ، دُخُولٌ، (دَخَلْتُ، تَدْخُلُ)

عَبَدَ، عَبَدُوا، عَبَدْتُ، عَبَدْتُمْ، عَبَدْنَا، يَعْبُدُونَ، تَعْبُدُونَ، أَعْبُدُ، تُعْبُدُونَ،
أَعْبُدُ، أَعْبُدُوا، لَا تَعْبُدُ، لَا تَعْبُدُوا، عَابِدٌ، مَعْبُودٌ، عِبَادَةٌ، (عَبَدْتُ، تَعْبُدُ)

नुक़ता शौक़ या नुक़ता खौफ़ और तालीमी नुक़ता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक - 18 कुरआनी दुआएँ

* ऐ मेरे रब मुझे और
ज्यादा इल्म दे ।

*ऐ हमारे रब! हमें दे
दुनिया में भलाई और
आखिरत में भलाई, और
हमें दोज़ख के अज़ाब से
बचा ले।

ग्रामर: ¹⁰⁰سَمِعَ (1d); ⁵¹⁸عَلِمَ (1d); and ³¹⁸عَمِلَ (1d) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये । बुनियादी गरदान वही **فَعَلَ** की है, फर्क सिर्फ़ ज़ेर ज़वर पेश का है । मसलन यहाँ **سَمِعَ** , **يَسْمَعُ** , **اسْمَعُ** के वजाये **يَسْمَعُ** , **اسْمَعُ** है, इसी तरह **عَمِلَ** , **يَعْمَلُ** , **اعْمَلُ** और **اعْمَلُ** , **يَعْمَلُ** , **اعْمَلُ** आते हैं,

سَمِعَ، سَمِعُوا، سَمِعْتُ، سَمِعْتُمْ، سَمِعْنَا، يَسْمَعُ، يَسْمَعُونَ، تَسْمَعُ، تَسْمَعُونَ، أَسْمَعُ، نَسْمَعُ
اسْمَعْ، اسْمَعُوا، لَا تَسْمَعُ، لَا تَسْمَعُوا، سَامِعٌ، مَسْمُوعٌ، سَمْعٌ (سَمِعْتُ، تَسْمَعُ)

عَلِمَ، عَلِمُوا، عَلِمْتُ، عَلِمْتُمْ، عَلِمْنَا، عَلِمْتُمْ، يَعْلَمُونَ، تَعْلَمُونَ، أَعْلَمُ، نَعْلَمُ
 اَعْلَمُ، اَعْلَمُوا، لَا تَعْلَمُ، لَا تَعْلَمُوا، عَالِمٌ، مَعْلُومٌ، عِلْمٌ (عَلِمْتُ، تَعْلَمُ)

عَمَلٌ، عَمَلُوا، عَمِلْتُ، عَمِلْتُمْ، عَمِلْنَا، يَعْمَلُونَ، تَعْمَلُ، تَعْمَلُونَ، أَعْمَلُ، نَعْمَلُ
اعْمَلْ، اْعْمَلُوا، لَا تَعْمَلْ، لَا تَعْمَلُوا، عامل، مَعْمُول، عَمَلٌ، (عَمِلْتُ، تَعْمَلُ)

नुकता शौक या नुकता खौफ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक – 19 मुतफर्रिकात

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ	وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ	وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ	وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ	وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ
और नहीं हम ने भेजा आपको	मगर	रहमत बना कर	जहानों के लिये	
اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ	اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ	اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ	اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ	اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ
अल्लाह है जिसने	पैदा किया तुमको	फिर रिज़क़ दिया तुम को	फिर मौत देगा तुमको	फिर ज़िन्दगी देगा तुमको
إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ	إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ	إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ	إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ	إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ
बेशक	अल्लाह	साथ (है)	सब्र करने वालों के	
إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ	إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ	إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ	إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ	إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ
बेशक हम अल्लाह के लिए	और बेशक हम	उसी की तरफ़	लौट कर जाने वाले हैं।	
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ	وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ	وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ	وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ	وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ
और अल्लाह	जानने वाला	हिक्मत वाला है		
يُسَبِّحُ اللَّهَ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ	يُسَبِّحُ اللَّهَ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ	يُسَبِّحُ اللَّهَ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ	يُسَبِّحُ اللَّهَ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ	يُسَبِّحُ اللَّهَ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
तसबीह करता है अल्लाह के लिये	जो (कुछ)	आसमानों में	और जो (कुछ)	ज़मीन में है।
يَقُومُ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ	يَقُومُ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ	يَقُومُ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ	يَقُومُ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ	يَقُومُ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ
ऐ मेरी कौम	इबादत करो अल्लाह की	नहीं है	तुम्हारे लिये	कोई माबूद
وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ	وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ	وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ	وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ	وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
और ज़िहाद करो	तुम्हारे मालों से	और तुम्हारी जानों से	अल्लाह के रास्ते में	

ग्रामर:

उसने कहा: قَالَ (1i) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये। 1719 قَالَ

قَالَ، قَالُوا، قُلْتَ، قُلْتُمْ، قُلْنَا، يَقُولُ، يَقُولُونَ، تَقُولُ، تَقُولُونَ، أَقُولُ، نَقُولُ
قُلْ، قُولُوا، لَا تَقُلْ، لَا تَقُولُوا، قَائِلٌ، مَقُولٌ، قَوْلٌ، (قَالَتْ، تَقُولُ)

हो जा! : كُنْ ; वह है या होगा : يَكُونُ ; वह था : كَانَ (1i) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये। 1361 كَانَ

كَانَ، كَانُوا، كُنْتَ، كُنْتُمْ، كُنَّا، يَكُونُ، يَكُونُونَ، تَكُونُ، تَكُونُونَ، أَكُونُ، نَكُونُ
كُنْ، كُونُوا، لَا تَكُنْ، لَا تَكُونُوا، كَائِنٌ، -، كَوْنٌ (كَانَتْ، تَكُونُ)

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक – 20 सुतफर्रिकात

أَيُّكُمْ		أَحْسَنُ		عَمَلًا	
कौन तुम में से		बेहतर (होगा)		अमल में	
هَذَا		مِنْ فَضْلِ		رَبِّي	
यह		फ़ज़ल से (है)		मेरे रब के ।	
إِنَّمَا الْأَعْمَالُ		بِالنِّيَّاتِ.		لَوْ تَفَتَّحُ	
आमाल तो बस		निय्यतों पर है ।		खोलती है	
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ		مِّنَ النَّوْمِ		السَّلَامُ عَلَيْكُمْ	
नमाज़		बेहतर है		सलामती हो आप पर	
مَنْ رَبُّكَ		مَا دِينُكَ؟		كَيْفَ الْحَالُ؟	
कौन है तेरा रब?		क्या है तेरा दीन?		क्या हाल है?	
كَمْ		فُلُوسٍ		كَمْ هَذَا؟	
कितने		पैसे हैं		आप के पास?	
فَرِشْتَا		مَوْتِ		كَانَ	
फ़रिश्ता मौत का		कितने में है यह (सामान)?		अल्लाह चाहे	

ग्रामर: 197 دَعَا (1j), 277 شَاءَ (1j) और 236 جَاءَ (1j) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये ।

(جَاءَ : वह आया) (شَاءَ : उसने चाहा), (دَعَا : उसने पुकारा)

دَعَا، دَعَوَا، دَعَوْتُ، دَعَوْتُمْ، دَعَوْنَا، يَدْعُو، يَدْعُونَ، تَدْعُو، تَدْعُونَ، أَدْعُو، نَدْعُو

أَدْعُ، أَدْعُوا، لَا تَدْعُ، لَا تَدْعُوا، دَاعٍ، مَدْعُوٌّ، دُعَاءٌ، (دَعَتْ، تَدْعُو)

شَاءَ، شَاءُوا، شِئْتُ، شِئْتُمْ، شِئْنَا، يَشَاءُ، يَشَاءُونَ، تَشَاءُ، تَشَاءُونَ، أَشَاءُ، نَشَاءُ

----، (شَاءَتْ، تَشَاءُ)

جَاءَ، جَاءُوا، جِئْتُ، جِئْتُمْ، جِئْنَا، ----

----، (جَاءَتْ، -)

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक – 21 इआदा

अब तक जो कुछ पढ़ा है उसका इआदा कीजिये ।

ग्रामर: (नया सबक)

ये छः अलफ़ाज़ कुरआन पाक में 2286 बार आये हैं । هَذَا، هَؤُلَاءِ، ذَلِكَ، أُولَئِكَ، الَّذِينَ، الَّذِي . इन 6 अलफ़ाज़ को समझते हुये TPI के ज़रिये इस तरह प्रेक्टिस कीजिये । هَذَا केहते वक़्त एक उँगली से और هَؤُلَاءِ केहते वक़्त चारों उँगलियों से नीचे किताबों की तरफ़ इशारा कीजिये । ذَلِكَ; أُولَئِكَ केहते वक़्त एक उँगली और चारों उँगलियों से (न दाएँ तरफ़ की तरफ़ जो कि هُوَ، هُمْ का है और न सामने की तरफ़ जो कि أَنْتَ، أَنْتُمْ का है बल्कि दोनों के बीच में) इशारा कीजिये । الَّذِي केहते वक़्त एक उँगली और चारों उँगलियों से उसी रख पर जो أَنْتَ، أُولَئِكَ का है ज़रा हाथ ऊपर की तरफ़ दूर की तरफ़ इशारा कीजिये, गोया आप किसी के बारे में (वह जो) याद दिला रहे हों । 5 मिनट की यह प्रेक्टिस आपको 2286 बार आने वाले अलफ़ाज़ को अच्छी तरह याद करवा देगी ।	Demonstrative and Relative Pronouns
	येह هَذَا
	येह सब هَؤُلَاءِ
	वह ذَلِكَ
	वह सब أُولَئِكَ
	वह जो الَّذِي
	वह सब जो الَّذِينَ

नुक़ता शौक़ या नुक़ता खौफ़ और तालीमी नुक़ता (जगह न हो तो इस सफ़ह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक – 22 और 23: बार बार आने वाले अलफ़ाज़ (शब्द)

तकरीबन 100 अलफ़ाज़ की लिस्ट जो कुरआन करीम में तकरीबन 40,000 बार आये हैं (कुल तकरीबन 78000 में से) | अलफ़ाज़ के मानी लिखिये और मिसालों को अच्छी तरह याद रखिये | याद रहे कि हम ने इस कोर्स में बुनियादी मानी सीखे हैं और कुरआन में यह अलफ़ाज़ अक्सर इन्ही मानों में इस्तेमाल हुये हैं |

لَا، لَا			
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ	1732	لَا	
لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ . وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ .	347	لَمْ (past)	
مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ، وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ	2155	مَا	
غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ، وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ	147	غَيْرِ	
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ	666	إِلَّا	
		إِنْ ... إِلَّا	
وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ .		مَا ... إِلَّا	
هَذَا، هَؤُلَاءِ، ...			
هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي	225	هَذَا mg	
mg/fg	46	هَؤُلَاءِ	
	427	ذَلِكَ mg	
mg/fg	204	أُولَئِكَ	
الَّذِي يُوسِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ .	304	الَّذِي mg	
صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ	1080	الَّذِينَ mg	
هُوَ، هُمْ، ...			
قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ .	481	هُوَ mg	
	444	هُمْ mg	
	81	أَنْتَ mg	
وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ .	135	أَنْتُمْ mg	
وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَا عَبَدْتُمْ .	68	أَنَا mg/fg	
	86	نَحْنُ mg/fg	
مَا، مَنْ، كَيْفَ؟ ...			
مَا دِينُكَ؟ ::	**	مَا؟	
مَنْ رَبُّكَ؟ ::	823	مَنْ؟	
كَيْفَ الْحَالُ؟ ::	83	كَيْفَ؟	
كَمْ هَذَا؟ :: كَمْ فُلُوسٍ عِنْدَكَ؟ ::		كَمْ؟	

कब?			
—		past	239
إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ .		future	454
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ، ::		بَعْدُ	196
اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ		ثُمَّ	338
كَمْ فُلُوسٍ عِنْدَكَ؟ ::		عِنْدَ	197
حروف جر...			
(ہ، مَمَّ، کَ، کَمْ، ی، لَ، مَا (جو इन छः के साथ आएँ			
لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ .		لِ ، لِ	1367
أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ::		مِنْ	3026
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ::		عَنْ	404
إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ		مَعَ	163
بِسْمِ اللَّهِ		بِ	510
فِي سَبِيلِ اللَّهِ		فِي	1658
السَّلَامُ عَلَيْكُمْ ::		عَلَى	1423
إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ .		إِلَى	736
لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ		حَتَّى	142
إِنَّ، أَنْ، إِنْ، أُنْ...			
إِنْ شَاءَ اللَّهُ ::		إِنْ	628
إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ		إِنْ	1297
أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ::		أَنْ	576
أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ ::		أَنَّ	263
إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ ::		إِنَّمَا	146
لَوْ تَفْتَحُ عَمَلَ الشَّيْطَانِ ::		لَوْ	200
قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ،		يَا، يَا أَيُّهَا	150
إِنَّ الْإِنْسَانَ لِفِي خُسْرٍ، وَلَقَدْ يَسْرَنَ الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ		لِ	-
قَدْ قَامَتِ الصَّلَاةُ ::، وَلَقَدْ يَسْرَنَ الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ		قَدْ	409

:: का मतलब यह है कि यह कुरआन का हिस्सा नहीं ।

सिफात Attributes			
82	أَوَّلُ أَوَّلَى	بِسْمِ اللَّهِ فِي أَوَّلِهِ وَآخِرِهِ ::	
40	آخِرِ آخِرَةِ	بِسْمِ اللَّهِ فِي أَوَّلِهِ وَآخِرِهِ ::	
57	رَحْمَن	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ .	
970	رَبِّ	الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ .	
91	عَفُور	إِنَّكَ أَنْتَ الْعَفُورُ الرَّحِيمُ ::	
162	عَلِيم	وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ	
97	حَكِيم	وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ	
74	كَثِيرٌ كَثِيرَةٌ	اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا ::	
182	رَحِيم	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ .	
निशानियाँ آیات			
70	قُرْآن	وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ	
461	أَرْض	يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ	
310	سَمَاء (سَمَاوَات pl)	يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ	
अम्बिया, रसूल			
332	رَسُول (رُسُل pl)	أَشْهَدُ أَنْ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ ::	
75	نَبِيٍّ (نَبِيُّونَ، نَبِيِّنَ، أَنْبِيَاء pl)	السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ ::	
279	آدَمَ نُوحَ إِبْرَاهِيمَ لُوطَ إِسْمَاعِيلَ يَعْقُوبَ (إِسْرَائِيل)		
225	هُودَ شُعَيْبَ مُوسَى عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ		
शैतान वगैरा			
88	شَيْطَان (شَيَاطِين pl)	أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ	
74	فِرْعَوْن		
आखिरत آخر			
115	الْآخِرَةِ	رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً	
147	جَنَّة (جَنَّات pl)	الْجَنَّة	
77	جَهَنَّمَ		
322	عَذَاب	رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ .	
145	نَار	رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ .	
393	يَوْم (أَيَّام pl)	مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ .	

अकीदा			
2702	الله (اللَّهُمَّ)	قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ	
85	أَحَدٌ (إِحْدَى fg)	قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ، وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ .	
34	إِلَهَ (آلِهَةٌ pl)	لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ	
261	كِتَاب (كُتِبَ pl)	—	
88	مَلِكٌ (مَلَائِكَةٌ pl)	مَلِكُ الْمَوْتِ ::	
247	حَقٌّ	...وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ	
43	حَمْدٌ	الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ .	
92	دِينٌ	مِلَّةَ يَوْمِ الدِّينِ، لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ .	
83	صَلَاةٌ	الصَّلَاةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ ::	
84	فَضْلٌ	هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي	
31	حَسَنَةٌ (حَسَنَاتٌ pl)	رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ .	
186	خَيْرٌ	الصَّلَاةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ ::	
इन्सान, लोग, दुनिया			
293	نَفْسٌ (أَنْفُسٌ pl)	اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا ::	
126	عَبْدٌ (عِبَادٌ pl)	أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ ::	
65	إِنْسَانٌ	إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ . إِلَّا الَّذِينَ ...	
248	نَاسٌ	قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ . مَلِكِ النَّاسِ . إِلَهِ النَّاسِ .	
383	قَوْمٌ	يَقُومُوا عِبَادُوا اللهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ	
115	دُنْيَا	رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ	
176	سَبِيلٌ (سُبُلٌ pl)	وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ	
46	صِرَاطٌ	صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ	
73	عَالَمٌ (عَالَمِينَ pl)	الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ	
86	مَالٌ (أَمْوَالٌ pl)	وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ	

Trilateral Verbs: ثلاثي مجرد								
105	فَعَلَ *	يَفْعُلُ	أَفْعُلُ	فَاعِلُ	مَفْعُولُ	فِعْلُ		
29	فَتَحَ *	يَفْتَحُ	أَفْتَحُ	فَاتِحُ	مَفْتُوحُ	فَتَحَ	إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ .	
346	جَعَلَ *	يَجْعَلُ	أَجْعَلُ	جَاعِلُ	مَجْعُولُ	جَعَلَ	اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ ::	
92	نَصَرَ *	يَنْصُرُ	أَنْصُرُ	نَاصِرُ	مَنْصُورُ	نَصَرَ	إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ .	
248	خَلَقَ	يَخْلُقُ	أُخْلِقُ	خَالِقُ	مَخْلُوقُ	خَلَقَ	مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ .	
461	كَفَرَ *	يَكْفُرُ	أُكْفِرُ	كَافِرُ	مَكْفُورُ	كَفَرَ	قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ، وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ ::	
163	ذَكَرَ *	يَذْكُرُ	أُذَكِّرُ	ذَاكِرُ	مَذْكُورُ	ذَكَرَ	وَلَقَدْ يَسِّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ	
122	رَزَقَ	يَرْزُقُ	أُرْزُقُ	رَازِقُ	مَرْزُوقُ	رَزَقَ	اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ	
78	دَخَلَ	يَدْخُلُ	أُدْخِلُ	دَاخِلُ	مَدْخُولُ	دَخُولُ	يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا .	
143	عَبَدَ *	يَعْبُدُ	أُعْبُدُ	عَابِدُ	مَعْبُودُ	عِبَادَةُ	إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ .	
58	ضَرَبَ *	يَضْرِبُ	أَضْرِبُ	ضَارِبُ	مَضْرُوبُ	ضَرَبَ	ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا	
95	غَفَرَ	يَغْفِرُ	أَغْفِرُ	غَافِرُ	مَغْفُورُ	مَغْفِرَةٌ	فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ ::	
53	صَبَرَ	يَصْبِرُ	أَصْبِرُ	صَابِرُ	—	صَبَرَ	إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ	
266	ظَلَمَ *	يَظْلِمُ	أَظْلِمُ	ظَالِمُ	مَظْلُومُ	ظَلَمَ	اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ::	
100	سَمِعَ *	يَسْمَعُ	أَسْمَعُ	سَامِعُ	مَسْمُوعُ	سَمَاعَةٌ	سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ::	
148	رَحِمَ	يَرْحَمُ	أَرْحَمُ	رَاحِمُ	مَرْحُومُ	رَحْمَةٌ	اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي ::	
518	عَلِمَ *	يَعْلَمُ	أَعْلَمُ	عَالِمُ	مَعْلُومُ	عِلْمُ	رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا	
318	عَمِلَ *	يَعْمَلُ	أَعْمَلُ	عَامِلُ	مَعْمُولُ	عَمَلُ	أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا، إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ ::	
1719	قَالَ *	يَقُولُ	أَقُولُ	قَائِلُ	مَقُولُ	قَوْلُ	قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ .	
55	قَامَ	يَقُومُ	قُمْ	قَائِمُ	—	قِيَامُ	قَدْ قَامَتِ الصَّلَاةُ ::	
1361	كَانَ *	يَكُونُ	كُنْ	كَائِنُ	مَكُونُ	كَوْنُ		
197	دَعَا *	يَدْعُو	أُدْعُ	دَاعٍ	مَدْعُورُ	دُعَاءُ	—	
277	شَاءَ *	يَشَاءُ	شَأْ	شَاءٍ	مَشِيٌّ	مَشِيَّةٌ	إِنْ شَاءَ اللَّهُ ::	
236	جَاءَ	يَحِيءُ	جِئْ	جَاءٍ	—	مَجِيءُ	إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ .	

* का निशान यह बताता है कि इन अफ़आल की तफ़सीली गरदान हमारी दूसरी किताब "कुरआन को समझये आसान तरीके से" में दी गई है.

सबक – 24 इस कोर्स के बाद... एक मिसाल (उदाहरण)

नए अलफ़ाज़ (शब्द) वही हैं जिन के नीचे लाईन दी गयी है। बाकी अलफ़ाज़ को आप ने इस कोर्स में सीख लिया है !!! अल्लाह का शुक्र है कि आप को कुरआने करीम के हर सफ़े पर 50% से ज़्यादा अलफ़ाज़ की पहचान हो गयी है।

255. अल्लाह है उसके सिवा कोई माबूद नहीं, जिंदा है, सब को थामने वाला, न उसे ऊँघ आती है और न नीन्द, उसी का है जो आसमानों और ज़मीन में है, कौन है जो सिफ़ारिश करे? उसके पास उसकी इजाज़त के बग़ैर, वह जानता है जो उनके सामने है, और जो उनके पीछे है, और वह नहीं अहाता कर सकते उसके इल्म में से किसी चीज़ का मगर जितना वह चाहे, उसकी कुर्सी समाए हुए है आसमानों और ज़मीन को, इनकी हिफ़ाज़त उसे नहीं थकाती, और वह बुलंद मर्तबा, अज़मत वाला है।

سُورَةُ الْأَنْكَرِ (255) آيَاتُ الْقُرْآنِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ				
اللَّهُ	لَا إِلَهَ	إِلَّا هُوَ	الْحَيُّ	
अल्लाह	नहीं माबूद	सिवा उसके	जिंदा	
الْقَيُّومُ	لَا تَأْخُذُهُ	سَنَةٌ	وَلَا نَوْمٌ	
थामने वाला	न उसे आती है	ऊँघ	और न नीन्द,	
لَهُ	مَا فِي	السَّمَاوَاتِ	وَمَا فِي	الْأَرْضِ
उसी का है	जो	आसमानों में	और जो	ज़मीन में
مَنْ ذَا الَّذِي	يَشْفَعُ	عِنْدَهُ،	إِلَّا	بِإِذْنِهِ
कौन	वह जो	उसके पास	मगर (बग़ैर)	उसकी इजाज़त से
يَعْلَمُ	مَا	بَيْنَ أَيْدِيهِمْ	وَمَا	خَلْفَهُمْ
वह जानता है	जो	उनके सामने	और जो	उनके पीछे है
وَلَا يُحِيطُونَ	بِشَيْءٍ	مِّنْ عِلْمِهِ،	إِلَّا	بِمَا شَاءَ
और वह नहीं अहाता करते	किसी चीज़ का	से उसका इल्म	मगर	जितना वह चाहे,
وَسِعَ كُرْسِيُّهُ	السَّمَاوَاتِ	وَالْأَرْضِ	وَلَا يَئُودُهُ،	
समालिया उसकी कुर्सी	आसमान	और ज़मीन	और नहीं थकाती उसे	
حَفِظُهَا	وَهُوَ	الْعَلِيُّ	الْعَظِيمُ (255)	
इनकी हिफ़ाज़त	और वह	बुलंद मर्तबा	अज़मत वाला	

कुल अलफ़ाज़ : 50, नए अलफ़ाज़ : 17 (33%), यानि सिर्फ 1/3 !!!

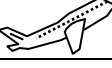
अब रुकिये मत 200 घन्टे तक

माशाअल्लाह आप ने यह कोर्स मुकम्मल कर लिया। सच ये है कि आप ने एक खूबसूरत, पुरशौक, और बहुत ही अहेम तरीन तालीमी सफ़र का आगाज़ किया है। अब रुकिये मत! अगर आप यहाँ तक पहुँच चुके हैं तो आगे बढ़िये। इन्शाअल्लाह अब यह सफ़र आसान होता जायेगा। यह शॉर्ट कोर्स हमारी किताब "कुरआन को समझये आसान तरीके से" का हिस्सा है। इस किताब के ज़रिये (या कोई और मुनासिब किताब से) आप अपना सफ़र जारी रखिये। "कुरआन को समझये आसान तरीके से" की कुछ खास ख़सूसियात यह है।

1. कुरआन को समझने की इत्तेदाई कोशिश उन आयात से कीजिये जिन की आप रोज़ाना तिलावत करते हैं! किसी दूसरी चज़ि को सीखने की ज़रूरत नहीं।
2. अपनी नमाज़ों और दुआओं में इसके फ़ायदों को फ़ौरी महसूस कीजिये।
3. जो आपने सीखा उस की मश्क़ हर रोज़ बार बार अल्लाह से समझ कर बात करते हुए कीजिये, इस से अपनी रग़बत और ताआल्लुक़ को बढ़ाइये।
4. 25 घन्टों का यह कोर्स तक़रीबन 70 फ़ीसद कुरआनी अलफ़ाज़ (अनदाज़न 78,000 में से 55,000) के समझने में मददगार होगा। कोर्स का दौरानिया 50 लेक्चर का है। हर लेक्चर तक़रीबन 25 मिनट का होगा।
5. इन्शाअल्लाह 25 मिनट की रोज़ाना कोशिश अगले दो महीनों में आपकी कुरआन फ़हमी के ख़ाब को सच करना शुरू कर देगी।
6. हर सबक़ में अरबी बोलचाल का एक अरबी जुमला सीखिये।
7. हर सबक़ में सिर्फ़ 8 से 10 मिनट में फ़ैल (VERB) के तमाम अहेम अववाब सीखिये।
8. हर सबक़ में अरबी बोलचाल, क़वाइद, और कुरआन शामिल हैं, इस तरह से पढ़ने वालों की दिलचस्पी ज़्यादा देर तक काएम रह सकती है।
9. अगर आप गुप में यह कोर्स कर रहे हों तो इस में हर आदमी लगातार शिरकत कर सकता है बजाये ख़ामोश सुनते रहने के।
10. अरबी ग्रामर का सीखना कभी भी इतना आसान न था। चूँकि इस कोर्स का मक़सद पढ़ने वालों को कुरआन के मौजूदा तराजिम (अनुवादों) के ज़रिये कुरआन को समझने में मदद देना है, इस वजह से इस कोर्स में "نحو" पर कम और "صرف" पर ज़्यादा तवज्जह दी गई है। "صرف" की तालीम के लिये एक निहायत ही सादा टेकनीक (TPI: Total Physical Interaction) का इस्तेमाल किया गया है। TPI के ज़रिये अरबी जुबान के एक मुश्किल सबक़ (فعل की गरदान) को सीखिये। यह वह मरहला है जिस के दौरान लोग सीखने के अमल को छोड़ देते हैं। TPI के इस्तेमाल से इस की सूरत बदल जाती है और यह निहायत ही आसान हो जाता है।
11. ग्रामर सीखने के दौरान (8 से 10 मिनट) आप को दिखाया जायेगा कि आप कुरआन फ़हमी से कितना क़रीब हो गये हैं। इस से आप को बहुत खुशी होगी।
12. कुइज़ों और दो इम्तेहानों के ज़रिये आप अपने आप को जाँच सकते हैं। यह अमल आपको कुरआन फ़हमी के कोर्स को जारी रखने में और ज़्यादा हिम्मत देगा।
13. अरबी जुबान के बाज़ मुश्किल क़वाइद को दिलचस्प मिसालों और इशारों से याद रखिये।
14. कोर्स के आख़िर में दस असबाक़ में पढ़े गये तमाम अहेम अलफ़ाज़ का इआदा 10 असबाक़ में पेश किया गया है। इन दस असबाक़ में ज़रूरी और बार बार आने वाले अलफ़ाज़ को आसानी से याद रखने के लिये पहले 50 असबाक़ में से ही मिसालें दी गई हैं।
15. अगर आप को किताब से सीखने में मुश्किल हो रही हो तो आप अकेडमी की तरफ़ से तय्यार कमप्यूटर सीडी हासिल कीजिये। इसमें दिये गये 60 वीडियू असबाक़ को बार बार देख कर इन में माहिर बनये और दूसरों को भी सिखाइये।
16. इस कोर्स का सब से अहेम पहलू यह है कि यह एक तरबियती कोर्स है। इसमें जो आयतें, अज़कार, और दुआएँ ली गई हैं उनको एक मुसलमान बार बार पढ़ता है। अगर वह इसको समझ कर पढ़े तो इन्शाअल्लाह इसका असर उसकी अपनी ज़िन्दगी पर ज़रूर होगा। साथ ही साथ उसको कुरआन फ़हमी की मंज़िल भी क़रीब और आसान लगेगी। इस कोर्स को या इस तरह के कोर्स को हर मुस्लिम घर, मदरसा, मक़तब और स्कूल का लाज़मी और अव्वलीन हिस्सा होना चाहिये।

بِسْمِ اللَّهِ
ف ع ل

To do, act (of doing) करना **فَعَلَ** (108) He did. उसने किया

Attached Pronouns ضمائر متصله	Imperfect Tense فِعْلٌ مُضَارِعٌ	Past Tense فِعْلٌ مَاضِي	Detached Pronouns ضمائر منفصله
هـ - ا	He does or will do. वह करता है वह करेगा يَفْعَلُ	He did. उसने किया فَعَلَ	هُوَ
هَما -	वह दोनों करते हैं या करेंगे يَفْعَلَانِ	उन दोनों ने किया فَعَلَا	هُمَا
هُم -	They do or will do. वह करते हैं वह करेंगे يَفْعَلُونَ	They all did. उन्होंने किया فَعَلُوا	هُمْ
كَ -	You do. You will do. आप करते हैं आप करेंगे تَفْعَلُ	You did. आप ने किया فَعَلْتَ	أَنْتَ
كُما -	तुम दोनों करते हैं या करेंगे تَفْعَلَانِ	तुम दोनों ने किया فَعَلْتُمَا	أَنْتُمَا
كُم -	You all do. You all will do. आप सब करते हैं आप सब करेंगे تَفْعَلُونَ	You all did. आप सब ने किया فَعَلْتُمْ	أَنْتُمْ
ي - (with noun) نِ - (with verb)	I do. I will do. मैं करता हूँ मैं करूँगा أَفْعَلُ	I did. मैं ने किया فَعَلْتُ	أَنَا
نا -	We do. We will do. हम करते हैं हम करेंगे نَفْعَلُ	We did. हम ने किया فَعَلْنَا	نَحْنُ
فَعْلٌ - اسم - جر	 ي ت ا ن	 - وَ ا ت ث م ت نا	

Negative نہی	Imperative أمر	
Don't do! मत कर ! لَا تَفْعَلْ	Do! कर ! افْعَلْ	Singular
तुम दोनों मत करो! لَا تَفْعَلَا	तुम दोनों करो ! افْعَلَا	Dual
Don't (you all) do! मत करो ! لَا تَفْعَلُوا	Do (you all) ! करो ! افْعَلُوا	Plural

Passive participle اسم مفعول	Active participle اسم فاعل	
The one who is affected. वह जिस पर असर पड़ा مَفْعُولٌ	Doer. करने वाला فَاعِلٌ	Singular
वह दोनों जिन पर असर पड़ा مَفْعُولَانِ, مَفْعُولَيْنِ	करने वाले (दो) فَاعِلَانِ, فَاعِلَيْنِ	Dual
All those who are affected. वह जिन पर असर पड़ा مَفْعُولُونَ, مَفْعُولِينَ	Doers. करने वाले فَاعِلُونَ, فَاعِلِينَ	Plural

مَجْهُولٌ →	It is being done. किया जाता है يُفْعَلُ	(It) is done. किया गया فُعِلَ	هُوَ ← مَجْهُولٌ
-------------	--	--	------------------

यहाँ तरजुमा (अनुवाद) नहीं दिया गया ता कि आप इस टेबल को पिछले से न मिला दें ।

Feminine Gender مُؤَنَّث

ف ع ل

She did. **فَعَلَتْ** (108)
उस औरत ने किया

Attached Pronouns	Imperfect Tense فِعْلٌ مُضَارِعٌ	Past Tense فِعْلٌ مَاضِي	Detached Pronouns
هِيَ -	تَفْعَلُ	فَعَلَتْ	هِيَ
هُمَا -	تَفْعَلَانِ	فَعَلْتَا	هُمَا
هُنَّ -	يَفْعَلْنَ	فَعَلْنَ	هُنَّ
ك -	تَفْعَلِينَ	فَعَلْتِ	أَنْتِ
كُمَا -	تَفْعَلَانِ	فَعَلْتُمَا	أَنْتُمَا
كُنَّ -	تَفْعَلْنَ	فَعَلْنَّ	أَنْتُنَّ
ي - (with noun) نِي - (with verb)	أَفْعَلُ	فَعَلْتُ	أَنَا
نَا -	نَفْعَلُ	فَعَلْنَا	نَحْنُ
فَعَلْ - جَر - اسم -	يَ تَ أ نَ 	تَ نَ تِ تْنِ تُ نَا 	

Negative فِي	Imperative أَمْر	
لَا تَفْعَلِي	افْعَلِي	Singular
لَا تَفْعَلَا	افْعَلَا	Dual
لَا تَفْعَلْنَ	افْعَلْنَ	Plural

Passive participle اسم مفعول	Active participle اسم فاعل	
مَفْعُولَةٌ	فَاعِلَةٌ	Singular
مَفْعُولَتَانِ ، مَفْعُولَتَيْنِ	فَاعِلَتَانِ ، فَاعِلَتَيْنِ	Dual
مَفْعُولَات	فَاعِلَات	Plural

مَجْهُولٌ →	تُفْعَلُ	فَعَلَتْ	هِيَ ← مَجْهُولٌ
Passive Voice			Passive Voice

बार बार आने वाले अल्फाज़ (शब्द)

to, toward तरफ़	on पर	in में	with, in से, साथ	with साथ	about से, बारे में	from से, साथ	for लिए
إِلَيْهِ	عَلَيْهِ	فِيهِ	بِهِ	مَعَهُ	عَنْهُ	مِنْهُ	لَهُ
إِلَيْهِمْ	عَلَيْهِمْ	فِيهِمْ	بِهِمْ	مَعَهُمْ	عَنْهُمْ	مِنْهُمْ	لَهُمْ
إِلَيْكَ	عَلَيْكَ	فِيكَ	بِكَ	مَعَكَ	عَنْكَ	مِنْكَ	لَكَ
إِلَيْكُمْ	عَلَيْكُمْ	فِيكُمْ	بِكُمْ	مَعَكُمْ	عَنْكُمْ	مِنْكُمْ	لَكُمْ
إِلَيَّ	عَلَيَّ	فِيَّ	بِي	مَعِيَ	عَنِّي	مِنِّي	لِي
إِلَيْنَا	عَلَيْنَا	فِينَا	بِنَا	مَعَنَا	عَنْنَا	مِنْنَا	لَنَا
إِلَيْهَا	عَلَيْهَا	فِيهَا	بِهَا	مَعَهَا	عَنْهَا	مِنْهَا	لَهَا

मानी याद रखने के लिये मिसालें (उदाहरण)

ب: بِسْمِ اللَّهِ فِي: فِي سَبِيلِ اللَّهِ عَلَى: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ إِلَى: إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ	ل: لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ، مِنْ: أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ، عَنْ: عَنِ النَّعِيمِ، رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ مَعَ: إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ
--	--

यह, वह, ... (Demonstrative Pronouns)

this	यह	هَذَا
these	यह सब	هَؤُلَاءِ
that	वह	ذَلِكَ
those	वह सब	أُولَئِكَ
the one who	वह जो	الَّذِي
those who	वह सब जो	الَّذِينَ